Saarth
E-Journal of Research

ISSNNO:2395-339X

वर्तमान परिदृश्य में पर्यावरणीय विकास

डॉ0 मधु प्रभा तिवारी
एसो0 प्रो0 अर्थशास्त्र
कालपी कॉलेज, (कालपी

शोध सारांश

पर्यावरण और आर्थिक विकास एक–दूसरे से परस्पर जुड़े हुए है, वही दूसरी तरफ एक देश की आर्थिक तरक्की भी पर्यावरण को प्रभावित करती है। उसी तरह पर्यावरण संसाधनो में गिरावट भी आर्थिक विकास को प्रभावित करता है। ऐसे कई सारी पर्यावरण नीतियां है। जिन्हे अपनाकर हम अपने पर्यावरण को भी बचा सकते है और अपनी आर्थिक उन्नति भी सुनिश्चित कर सकते है।

मुख्य शब्द – पर्यावरण का अर्थ, परिभाषा, पर्यावरण के विभिन्न घटक, समस्या और समाधान

सार

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है – परि आवरण। 'परि' का अर्थ है– चारों तरफ से और 'आवरण' का अर्थ है– ढँके हुए। इस प्रकार पर्यावरण या वातावरण शब्द का अर्थ हुआ व्यक्ति के आस–पास और चारों ओर जो कुछ भी है, वही उसका पर्यावरण कहा जाता है। मानव के चारों और फैले हुए वातावरण को पर्यावरण की परिधि में माना जाता है। मानव जन्म से मृत्यु पर्यन्त पर्यावरण में ही रहता है। पर्यावरण द्वारा वह वैयक्तिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में विकास करता है। यदि उसे अच्छा वातावरण नहीं दिया जाय तो वह आदर्श मानव के रूप में स्वस्थ नागरिक नहीं बन सकता। व्यक्ति को चारों ओर से ढंकने वाला आवरण ही 'पर्यावरण' कहलाता है। इसके अभाव में सुखद जीवन ही असम्भव है।

पर्यावरण का अर्थ

पर्यावरण शब्द परि + आवरण से मिलकर बना है परि का अर्थ है चारों ओर और आवरण का अर्थ है घिरा हुआ। अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है चारों ओर से घिरा हुआ । जैसे नदी ,पहाड़, तालाब, मैदान, पेड़–पौधे, जीव–जंतु वायु वन मिट्टी आदि सभी हमारे पर्यावरण के घटक है। हम सभी इन घटको का दैनिक जीवन में भरपूर उपयोग करते है अर्थात हम इन घटको पर ही निर्भर है।

पर्यावरण की परिभाषा

पर्यावरण की परिभाषा इस प्रकार है –

1. जे.एस. रॉस के अनुसार– " पर्यावरण या वातावरण वह वाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती हैं।"

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

2. डगलस एंव हालैण्ड के अनुसार– " पर्यावरण वह शब्द है जो समस्त वाह्य शक्तियों ,प्रभावों और परिथितियों का सामूहिक रूप से वर्णन करता है जो जीवधारी के जीवन ,स्वभाव ,व्यवहार तथा अभिवृद्धि , विकास तथा प्रौढता पर प्रभाव डालता है ।"

3. हर्स, कोकवट्स के अनुसार– " पर्यावरण इन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है तो प्राणी के जीवन तथा विकास पर प्रभाव डालता है।"

4. डॉ डेविज के अनुसार– " मनुष्य के सम्बन्ध में पर्यावरण से अभिप्राय भूतल पर मानव के चारों ओर फैले उन सभी भौतिक स्वरूपों से है। जिसके वह निरन्तर प्रभावित होते रहते हैं।"

5. डडले स्टेम्प के अनुसार– " पर्यावरण प्रभावों का ऐसा योग है जो किसी जीव के विकास एंव प्रकृति को परिस्थितियों के सम्पूर्ण तथ्य आपसी सामंजस्य से वातावरण बनाते हैं।"

6. ए.बी.सक्सेना के अनुसार– " पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जो पर्यावरण के बार में हमें संचेतना, ज्ञान और समझ देती है । इसके बारे में अनुकूल दृष्टिकोण का विकास करती है और इसके संरक्षण तथा सुधार की दिशा में हमे प्रतिबद्ध करती हैं।"

7. शिक्षाशास्त्री टॉमसन के अनुसार– " पर्यावरण ही शिक्षक है शिक्षा का काम छात्र को उसके अनुकूल बनाना हैं।"

8. विश्व शब्दकोश के अनुसार– " पर्यावरण उन सभी दशाओं, प्रणालियों तथा प्रभावों का योग है जो जीवों व उनकी प्रजातियों के विकास जीवन एंव मृत्यु को प्रभावित करता हैं।"

9. हर्सकोविट्ज के अनुसार – " जो तथ्य मानव के जीवन और विकास को प्रभावित करजे है उस सम्पूर्ण तथ्यों का योग पर्यावरण कहलाता है भले ही वे तथ्य सजीव हो अथवा निर्जीव ।"

10.जर्मन वैज्ञानिक फिटिगं के अनुसार " पर्यावरण जीवों के परिवृत्तिय कारकों का योग है । इसमें जीवन की परिस्थितियों के सम्पूर्ण तथ्य आपसी सामंजस्य से वातावरण बनाते हैं।"

11. विश्व के लिए शिक्षा मूनस्को यूरोप के अनुसार– " पर्यावरण शिक्षा के विषय क्षेत्र अन्य पाठ्यक्रमों की तुलना में कम परिभाषित है । फिर भी यह सर्वमान्य है कि जैविक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और मानवीय संसाधनों से सामग्री प्राप्त होती हों । इस शिक्षा के लिए संप्रत्यात्मक विधि सर्वोत्तम हैं।"

12. निकोलर्स के अनुसार– " पर्यावरण उन समस्त बाहरी दशाओं तथा प्रभावों का योग है जो प्रत्येक प्राणी के जीवन विकास पर प्रभाव डालते है "

13. सी.सी. पार्क के अनुसार– " मनुष्य एक विशेष समय पर जिस सम्पूर्ण परिस्थितियों से धिरा हुआ है उसे पर्यावरण या वातावरण कहा जाता है। "

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि जो कुछ भी हमारे चारों ओर विद्यमान है तथा यह हमारी रहन–सहन दषाओं तथा मानसिक क्षमताओं को प्रभावित करता है, पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण में वे सभी परिस्थितियाँ भी आती हैं, जो हमारे जीवन पर प्रभाव डालती हैं। हमारा घर,

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X
मौहल्ला, गाँव, शहर सभी हमारे पर्यावरण के अंग हैं क्योंकि वे सभी हमारे जीवन पर प्रभाव डालते हैं। 'पर्यावरण' मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समाविष्ट हैं।

पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। यह उन संपूर्ण शक्तियों, परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है जो मानव को परावृत करती है तथा उसके क्रियाकलापों को अनुषासित करती है।

पर्यावरण के प्रकार

वर्तमान समय में मनुष्य प्रदूषण के प्रकार स्वयं प्रदूषण का स्त्रोत है, क्योंकि प्रकृति में कोई भी ऐसी विधि नहीं पाई जाती है जो कि मनुष्य के द्वारा निर्मित पदार्थों को अपघटित कर सके, और उन तत्वों को प्रकृति के चक्र में कर देवें। यह पदार्थ इसी रूप में पाये जाते हैं और जो भी वह क्षति पहुँचाना चाहते हैं, वह क्षति पहुँचा देते हैं या हानि उत्पन्न कर देते हैं, जब तक कि वह विस्तारित या तनुकृत न हो जावे अतः प्रदूषण निम्न प्रकार के होते हैं –

वायु प्रदूषण,

जल प्रदूषण

मिट्टी/मृदा प्रदूषण

समुद्री प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण

तापीय प्रदूषण

आणविकीय संकट

जैव प्रदूषण

ठोस अपषिष्ट प्रदूषण।

पर्यावरण के विभिन्न घटक

पर्यावरण के मुख्यतः दो अंग या घटक हैं–

1. भौतिक/अजैविक घटक और

2. जैविक घटक।

भौतिक घटक में पर्यावरण के भौतिक तत्त्व, जैसे स्थल, जल और वायु सम्मिलित हैं तथा जैविक घटक में पेड़–पौधे और सभी छोटे–बड़े जीव–जन्तु सम्मिलित हैं। पर्यावरण के भौतिक घटक तथा जैविक घंटे एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। भौतिक पर्यावरण के बदलने से जैविक पर्यावरण की संरचना में भी अंतर आ जाता है। हमारे लिए पर्यावरण का महत्त्व सभी वस्तुओं से ज्यादा है क्योंकि हम पर्यावरण में रहते हैं। हमारी पृथ्वी यानि हमारा स्थलमण्डल ही हमारा निवास है जो कि पर्यावरण के अजैविक तत्त्व के अन्तर्गत आते हैं। वो भी हमारे पर्यावरण का ही हिस्सा है और हम मनुष्य जो कि जैविक तत्त्व के अन्तर्गत आते हैं वो भी पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। पर्यावरण के इस जैविक तथा

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

अजैविक तत्त्वों से परस्पर सम्बन्धों को जानने के बाद हमारी जिम्मेदारी ये होनी चाहिए कि हम जैसे अपने परिवार वालों और अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा की चिंता करते हैं वैसे ही हमें अपने पर्यावरण की सुरक्षा की चिन्ता होनी चाहिए क्योंकि पर्यावरण नहीं, तो हम नहीं। हमें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिये। आइये पर्यावरण के उपर्युक्त घटकों को संक्षिप्त रूप में समझने का प्रयास करें।

पर्यावरण का भौतिक/अजैविक घटक

पर्यावरण के भौतिक/अजैविक तत्त्वों की विशेषताओं के आधार पर पर्यावरण के भौतिक घटकों को निम्न तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. ठोस कृ ठोस पदार्थ के अंतर्गत भूमि तथा धरती को सम्मिलित किया गया है। स्थल मंडल इसी के अंतर्गत आता है।

2. तरल दृ तरल पदार्थ के अंतर्गत जल एवं जलमंडल को शामिल किया गया है।

3. गैस– इसके अंतर्गत वायु तथा वायुमंडल शामिल है।

धरती– धरती सौरमण्डल का अनोखा ग्रह कहलाती है क्योंकि इस पर जीव–जन्तुओं एवं पेड़ पौधों के विकास तथा जीवन के लिये उपयुक्त परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं इन परिस्थितियों के लिये कई कारक जिम्मेदार हैं जिनमें से कुछ मुख्य परिस्थितियाँ हैं–

(1) एक मुख्य कारक है – सूर्य से धरती की दूरी। इस दूरी की वजह से पृथ्वी न तो बुध ग्रह की तरह गर्म है न ही बृहस्पति जैसे ग्रह की तरह ठण्डी। शुक्र और

(2) वायुमंडल की उपस्थिति – पृथ्वी के चारों तरफ वायु का आवरण है जिसमें ऑक्सीजन गैस पाई जाती है जो सभी प्राणियों के लिये प्राणवायु का काम करती है, इस गैस के बिना जीवन संभव नहीं।

(3) तापमान का नियंत्रण – वायुमंडल तापमान नियंत्रण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फलतः पृथ्वी पर दिन और रात, सर्दियों एवं गर्मियों के तापमान में बहुत अधिक अंतर नहीं होता। तापमान की विशेषताओं के कारण ही धरती पर जल का विशाल भंडार पाया जाता है। तापमान में परिवर्तन के कारण ही जल का संचरण जलमंडल, स्थलमंडल और वायुमंडल के बीच होता रहता है। जल के कारण ही धरती पर विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और जीव–जंतुओं की विभिन्न जातियों का उद्भव और विकास संभव हो सका।

पर्यावरण के प्रमुख तत्व

पर्यावरण के तत्वों के प्रकार की तो पर्यावरण के तत्व को दो भागों में बाटा जा सकता है दृ

जैविक तत्व और

अजैविक तत्व

1. पर्यावरण के तत्व – प्रकाश

प्रकाश की जरुरत हर व्यक्ति भली भाती जानता है, हरे पौधों को इसकी आवश्यकता भोजन बनाने के लिए पड़ती है पौधे प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से अपना भोजन बनाते हैं और इस हरे पौधे पर सभी

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

प्राणी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर रहते हैं। सभी जीवों के लिए सूर्य से आने वाला प्रकाश ही ऊर्जा का अंतिम स्त्रोत है।

2. पर्यावरण के तत्व – वर्षण

वर्षण के कई रूप हैं जैसे दृ वर्षा, कोहरा, हिमपात, ओलावृष्टि इत्यादि यह एक महत्वपूर्ण कारक है जिससे सभी प्राणी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहते हैं हालांकि पृथ्वी के सभी जगहों पर वर्षण सामान नहीं हो सकता यह अलग–अलग जगहों पर भिन्न–भिन्न प्रकार का होता है।

3. पर्यावरण का तत्व – आद्रता व जल

वायु में नमी (आद्रता) का होना कई जीव–जंतुओं, पेड़–पौधों, तथा मनुष्यों के लिए जरुरी है कुछ प्राणी तो ऐसे हैं जो केवल रात में ही संक्रिय होते हैं क्योंकि रात में आद्रता अधिक होती है।

4. पर्यावरण का तत्व – वायुमण्डलीय गैस

स्थलीय जीवों के लिए आक्सीजन तथा कार्बनडाई ऑक्साइड सीमाकारी कारक नहीं होते वायुमण्डल में इन दोनों गैसों की भरपूर मात्रा पायी जाती है।

5. पर्यावरण का तत्व – तुंगता

अलग–अलग उचाईयों पर वर्षण तथा तापमान दोनों में भिन्नता पाई जाती है, वर्षण आमतौर पर उचाई के साथ बढ़ता जाता है लेकिन चरम इकाइयों पर यह कम हो सकता है तापमान प्रायः 2–3 अंश प्रति हजार फिट पर घटता जाता है।

6. पर्यावरण का तत्व – अक्षांश

जैसे–जैसे हम विद्युत रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर बढ़ते जाते हैं वैसे–वैसे सूर्य का कोण भी सामान्यतः छोटा होता जाता है जिससे औसत तापमान गिरता जाता है।

7. पर्यावरण का तत्व – ऋतुपरक परिवर्तन

चुकि पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी हुई है इसलिए जब विद्युत रेखा से आगे बढ़ते जाते हैं तब वर्ष के दौरान सौर विकिरण का कोण बदलता जाता है। इससे मौषम में परिवर्तन आता है और ऋतुएँ बनती है जैसे– शीत, बसंत, ग्रीष्म तथा शरद।

8. पर्यावरण का तत्व – जल

जल पृथ्वी पर पाया जाने वाला एकमात्र अकार्बनिक तरल पदार्थ है, जो कि संसाधन, परिस्थिति, या आवास के रूप में काम आ सकता है. पृथ्वी पर जल की कुल मात्रा सामान रहती है जबकि यह एक स्थान से दूसरे स्थान जाता रहता है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

9. पर्यावरण का तत्व – उच्चावच

भू–आकर या उच्चावच पर्यावरण का एक अति महत्वपूर्ण तत्व है आप जानते हैं कि पूरी पृथ्वी की धरातल सब तरफ एक बराबर नहीं है। कही पठार तो कही मैदान और कही पर्वत अलग–अलग जगहों पर मिटटी की गुणवत्ता भी भिन्न–भिन्न होती है।

10. पर्यावरण का तत्व – वायु

हवाओ का सम्बन्ध वायुभार तथा तापमान से होता है हवाएं उच्च वायुभार से निम्न वायुभार की दिशा में चलती है विश्व में सालभर चलने वाली व्यापारिक, पछुआ व ध्रुवीय हवाएं है तो दूसरी तरफ मौषम के साथ परिवर्तित होने वाली मानसूनी हवाएं है।

इसके अलावा स्थानीय हवाएं और चक्रवात भी चलते हैं ये सभी हवाएं जलवायु अर्थात तापक्रम वर्षा आदि को प्रभावित करती है तथा इनका प्रभाव वनस्पति और मानव पर भी होता है।

पर्यावरण के जैविक तत्व

ऊपर आपने पर्यावरण के अजैविक तत्वों के बारे में जाना इसके अलावा पर्यावरण के जैविक तत्व के अंदर भी दो घटक आते हैं परपोषी और स्वपोषी।

1. स्वपोषी तत्व : जीव, हरे पौधे कुछ खास जीवाणु और सैवाल जो सूर्य के प्रकाश की उत्पत्ति में सरल अजैविक पदार्थों में अपना भोजन स्वयं बना सकते हैं ऐसे जीव जो स्वयं अपना भोजन बना सकते हैं स्वपोषी अथवा प्राथमिक उत्पादक कहलाते हैं।

2. परपोषी तत्व : वे सभी जीव जो अपना भोजन स्वयं नहीं बनाते एवं अन्य जीवों से अपना भोजन प्राप्त करते है परपोषी या उपभोक्ता कहलाते हैं।

पर्यावरणीय समस्याएं और समाधान

पर्यावरण संबंधी समस्याओं

पर्यावरणीय समस्याएं प्रायः विकास की अवस्था, आर्थिक संरचना, प्रचलित उत्पादन तकनीकों और पर्यावरणीय नीतियों पर निर्भर करती हैं । तथापि हमने कुछ पर्यावरणीय समस्याओं का वर्णन किया है जिनका सामना अल्प विकसित देश कर रहे हैं । वे इस प्रकार हैं:

वायु प्रदूषण

शहरीकरण और औद्योगिक वृद्धि के कारण वातावरण प्रदूषित हो गया । बड़े शहरों में वाहनों का बढ़ता हुआ यातायात प्रदूषण का मुख्य कारण है । इसके अन्य कारण हैं दो स्टोक इंजन, पुराने वाहन, यातायात की भीड़, बुरी सड़कें, पुरानी हो चुकी स्वचालित तकनीकें और यातायात की प्रबन्ध प्रणाली ।

औद्योगिक प्रदूषण की समस्या प्रायः उन स्थानों पर गम्भीर होती है जहां पैट्रोल परिशोधन कारखाने, रासायनिक, लोहा और इस्पात, गैर–धातु उत्पाद, गूंद और कागज के कारखाने तथा वस्त्र उद्योग स्थित हैं । यहां तक छोटी ढलाई इकाइयां, रासायनिक निर्माण तथा ईंट बनाने वाले भट्ठ भी वायु को प्रदूषित करते हैं ।

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

झुग्गी–झौंपड़ी, गन्दी बस्तियों तथा कम हवादार और रोशनी वाले घर और खाना पकाने के लिये घरेलू स्टोव, लकड़ी, कोयला प्रयोग करने वाले लोग भी प्रदूषण फैलाते हैं । घरों में धुआंधार वायु स्त्रियों और बच्चों के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालती हैं ।

वाहन, डीजल के जेनरेटर, निर्माण गतिविधियां और लाऊड स्पीकर शहरों में वातावरण को प्रदूषित करने के अन्य कारण हैं । इसके अतिरिक्त ताप शक्ति–संयन्त्र भी प्रदूषण के अन्य स्त्रोत हैं ।

जल प्रदूषण

जल प्रदूषण भी एक बड़ी सीमा तक आर्थिक वृद्धि को रोकता है । जल प्रदूषण के मुख्य स्रोत हैं– घरेलू मल–व्यवस्था में प्रयुक्त होने वाला जल, औद्योगिक बहिःस्राव जिसमें कार्बनिक प्रदूषक तत्व तथा रसायनों के अपशिष्ट, भारी धातु और खनन कार्य के अपशिष्ट मल जल तथा उद्योगों का गन्दा पानी, झीलों, नहरों, नदियों, तटीय क्षेत्रों और भूमिगत जल स्रोतों की ओर बह जाता है, जो अन्ततः समस्त व्यवस्था को नष्ट कर देना है ।

प्रदूषित एवं अशोधित जल से उत्पन्न होने वाले रोग है प्रतिसार, यकृतशोध, जठर शोथ, रोहा आदि । इसके अतिरिक्त पीने का पानी सुरक्षित उपलब्ध कराने से नगर निगमों की लागतें बढ़ जाती हैं । जल की कमी के कारण असुविधा होती है तथा देश का विकास रुकता है ।

ठोस और खतरनाक अपशिष्ट

शहरी क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट भी वायु और जल के प्रदूषण का कारण बनते हैं । ठोस अपशिष्टों के एकत्रीकरण, परिवहन, उपचार और ठिकाने लगाने की सुविधाओं के न होने के कारण अनियमित शहरी वृद्धि वातावरण एवं जल साधनों को प्रदूषित कर देती है । इसके अतिरिक्त कूड़े के ढेर, रुकी हुई नालियां फैलने वाले रोगों को जन्म देती है तथा भूमिगत जल के स्रोतों को दूषित करती हैं ।

मिट्टी की अधोगति

मिट्टी की अधोगति एक अन्य पर्यावरणीय समस्या है । यह जल एवं वायु के कारण होती है । पर्वतीय क्षेत्रों में मिट्टी का क्षरण वर्षा और नदियों के कारण होता है । इसके कारण भूस्खलन तथा बाढ़ आदि भी होते हैं ।

वनों की कटाई, पशुओं की अधिक चराई तथा पर्वतीय क्षेत्रों में सोपानीय कृषि भी भूमि क्षरण के कारण हैं । सिंचाई वाली भूमि पर जल भराव और गहन–कृषि से खारापन और मिट्टी की अधोगति होती हैं । मिट्टी की सब प्रकार की अधोगति इसके उपजाऊपन को कम करती है ।

वनों की कटाई

वनों की कटाई पर्यावरणीय समस्याओं का एक अन्य कारक है । उद्योगों की स्थापना तथा शहरों, सड़कों, राजमार्गों और बांधों के निर्माण के लिये वृक्षों को गिराया जाता है तथा उनके प्राकृतिक विकास को रोका जाता है। इससे वनस्पति तथा जीव जन्तुओं का नाश होता है । इससे पर्वतीय और समीप के क्षेत्रों में बाढ़ का भय बना रहता है । इससे मानव और पशु जीवन की हानि होती है ।

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

हरा–भरा भू–दृश्य कारखानों, आवासीय और व्यवसायिक भवनों में परिवर्तित हो जाता है । इससे अधिक गर्मी और शोर प्रदूषण उत्पन्न होता है जिससे मानव का क्षय तो होता है जन्म सम्बन्धी त्रुटियों के अलावा और प्रजनन समस्याएं भी उत्पन्न होती हैं ।

जैव विविधता की हानि

प्रत्येक देश को अद्भुत वनस्पति–भूगोल और कृषि–पारिस्थितिकी की विविधता उपलब्ध होती है जिसमें कृषि जलवायु क्षेत्रों की विस्तृत विविधता तथा अनेक पौधों और पशुओं की प्रजातियां सम्मिलित हैं ।

आर्थिक वृद्धि जिस कारण कृषि का विकास हुआ है, वनों एवं खनिज सम्पत्ति का अत्याधिक शोषण हुआ है और जैव विविधता क्षेत्रों में विकास परियोजनाओं के आरम्भण से प्रकृति का विनाश हुआ है । परिणामतः पौधों, पशुओं और सूक्ष्म जैविकीय प्रजातियों की हानि हुई है ।

समस्या का समाधान

वातावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए वृक्षारोपण सर्वश्रेष्ठ साधन है। दूसरी ओर वृक्षों के अधिक कटाव पर भी रोक लगायी जानी चाहिए। कारखाने और मशीनें लगाने की अनुमति उन्हीं लोगों को दी जानी चाहिए जो औद्योगिक कचरे और मशीनों के धुएँ को बाहर निकालने की समुचित व्यवस्था कर सकें। संयुक्त राष्ट्र संघ को चाहिए कि वह परमाणु परीक्षणों को नियन्त्रित करने की दिशा में उचित कदम उठाए। तेज ध्वनि वाले वाहनों पर साइलेंसर आवश्यक रूप से लगाए जाने चाहिए तथा सार्वजनिक रूप से लाउडस्पीकरों आदि के प्रयोग को नियन्त्रित किया जाना चाहिए। जल–प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए औद्योगिक संस्थानों में ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि व्यर्थ पदार्थों एवं जल को उपचारित करके ही बाहर निकाला जाए तथा इनको जल स्त्रोतों में मिलाने से रोका जाना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत सरकार प्रदूषण की समस्या के प्रति जागरूक है। उसने 1974 ई0 में 'जल–प्रदूषण निवारण अधिनियम' लागू किया था। इसके अन्तर्गत एक 'केंद्रीय बोर्ड' तथा प्रदेशो में 'प्रदूषण–नियन्त्रण बोर्ड' गठित किये गए है। इसी प्रकार नये उद्योगों को लाइसेंस देने और वनों की कटाई रोकने की दिशा में कठोर नियम बनाए गए हैं। इस बात के भी प्रयास किये जा रहे हैं कि नये वन–क्षेत्र बनाए जाएँ और जन–सामान्य को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित किया जाए। न्यायालय द्वारा प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को महानगरों से बाहर ले जाने के आदेश दिये गए हैं। यदि जनता भी अपने ढंग से इन कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग दे और यह संकल्प ले कि जीवन में आने वाले प्रत्येक शुभ अवसर पर कम–से–कम एक वृक्ष अवश्य लगाएगी तो निश्चित ही हम प्रदूषण के दुष्परिणामों से बच सकेंगे और आने वाली पीढ़ियों को भी इसकी काली छाया से बचाने में समर्थ हो सकेंगे।

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

संदर्भ सूची

Adams, Simon; David Lambert (2006). Earth Science: An illustrated guide to science. New York NY 10001: Chelsea House. p. 20. ISBN 0-8160-6164-5.

"Earth's Energy Budget". Oklahoma Climatological Survey. 1996–2004. Retrieved 2007-11-17.

Oldroyd, David (2006). Earth Cycles: A historical perspective. Westport, Connicticut: Greenwood Press. ISBN 0-313-33229-0.

Simison, W. Brian (2007-02-05). "The mechanism behind plate tectonics". Retrieved 2007-11-17.

Smith, Gary A.; Aurora Pun (2006). How Does the Earth Work? Physical Geology and the Process of Science. Upper Saddle River, NJ 07458: Pearson Prentice Hall. p. 5. ISBN 0-13-034129-0.